ASSIGNMENT

NAME- SHRISHTY KUMARI

SEMESTER- IIIrd

YEAR — IInd.

SUBJECT- SANISKRIT METERS & MUSIC

PROGRAME- B.A (HONS.) SANISKRIT.

ROLL NO- Skt/19/21.

Scanned by TapScanner

9 छंदशास्त्र पर विस्तार से निबंध लिखिए।

→ छन्द-प्रतिपादक ग्रन्थों का सामान्य परिचय

संस्कृत वाङ्मय में प्राप्त छन्दः शास्त्र से सम्बन्धित विभिन्न विद्वानों के द्वारा बहुत सारे ग्रन्थों की रचना की गई। इसका विस्तृत विवरण तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा रहा है। प्रथम श्रेणी में वैदिक छन्दों से सम्बन्धित ग्रन्थों का, द्वितीय श्रेणी में लौकिक छन्दों से सम्बन्धित ग्रन्थों का तथा तृतीय श्रेणी में वैदिक और लौकिक दोनों छन्दों से सम्बन्धित ग्रन्थों के विषय में बताया गया है।

1. वैदिक छन्द प्रतिपादक ग्रन्थों का सामान्य परिचय-

संस्कृत वाङ्मय के इतिहास में वेदों का किसी व्यक्ति-विशेष की रचना न मानकर अपौरुषेय शब्दराशि के रूप में स्वीकार किया गया है तथा वैदिक शब्दराशि में प्राप्त छन्दों का प्रतिपादन मुख्य रूप से वेदाङ्ग, वेदों के उप अङ्ग तथा अनुक्रमणिका ग्रन्थों में भिन्न स्थानों पर प्राप्त होता है। वैदिक छन्द से सम्बन्धित प्रतिपाद्य ग्रन्थों का संक्षेप परिचय निम्नलिखित है=

Scanned by TapScanner

1.1 - ऋक्‌ - प्रातिशाख्य -

ऋक्‌ - प्रातिशाख्य के रचनाकार आचार्य आश्वलायन के गुरु महर्षि शौनक है। इसमें लगभग सभी वैदिक छन्दों के लक्षण के साथ - साथ उदाहरण का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसका आधार भी ब्राह्मण ग्रन्थ ही है। इसमें वर्णित छन्दों का विवरण कात्यायन द्वारा रचित ऋक्सर्वा- नुक्रमणी से प्राचीन है तथा यास्क से नवीन है ऋक्प्रातिशाख्य में ऋग्वेद की शाकल शाखा की एकमात्र उपलब्ध शैशिरीय उपशाखा का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। ऋक्प्रातिशाख्य में 23 प्रगाथ छन्दों का वर्णन प्राप्त होता है। इसमें कुल कुल 188 छन्दों के लक्षण तथा उदाहरण प्राप्त होते है इन 188 छन्दों मे से शौनक ने 64 छन्दों का लक्षण स्वयं दिया है तथा अन्य छन्दों के लक्षण पूर्व ग्रन्थों से उद्धृत किये गये है।

1.2 निदानसूत्र —

निदानसूत्र सामवेद की प्राप्त तीन शाखाओं में से कौथुमीयशाखा से सम्बन्धित है निदानसूत्र के रचयिता महर्षि पतञ्जलि है। इसका काल 200 ई पू। स्वीकार किया जाता है। निदानसूत्र में 10

Scanned by TapScanner

प्रपाठक है एवं प्रत्येक प्रपाठक में 13 खण्ड है। निदानसूत्र में पतञ्जलि ने 27 छन्दों के ~~द्वापर काल से सम्बन्ध रखते है~~ भेदों - प्रभेदों की चर्चा की है। निदानसूत्र के जिन प्रपाठकों में छन्दों का उल्लेख हुआ है इस भाग पर तातप्रसाद द्वारा रचित तत्त्वसुबोधिनी नामक वृत्ति उपलब्ध होती है। निदानसूत्र में अर्थ को प्रधानता दी गई है।

1.3 उपनिदानसूत्र -

उपनिदानसूत्र के रचयिता गार्ग्याचार्य है। इनके देश तथा काल के विषय में पूर्वतः कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। उपनिदानसूत्र चार वेदों में से तृतीय वेद सामवेद से सम्बन्धित है सामवेद की दो शाखाओं में प्राप्त छन्दों का विस्तृत उपनिदानसूत्र में किया गया है। उपनिदानसूत्र को अन्य नामों से भी जाना जाता है यथा - छन्दोविचयः, सामगानां छन्दः, छन्दः परिशिष्ट इत्यादि। उपनिदानसूत्र को 2 पटलों तथा 8 अध्यायों में विभक्त किया गया है इस ग्रन्थ में ~~कुछ~~ कुल 60 वैदिक छन्दों का विवरण दिया गया है। आरण्यक में जो छंद प्राप्त होते है उनको रहस्य छन्दों के नाम से जाना जाता है।

Scanned by TapScanner

1.4 ऋक्सर्वानुक्रमणी

आचार्य कात्यायन के द्वारा रचित ऋक्सर्वानुक्रमणी है आचार्य कात्यायन ने महर्षि पाणिनि के सूत्रों पर वार्तिकों की रचना की है इनका एक नाम वररुचि भी जाना जाता है ये नौ शुल्वसूत्रों में से एक रचयिता भी हैं संस्कृत के विद्वानों के द्वारा आचार्य कात्यायन का स्थितिकाल लगभग 700ई० के पूर्व स्वीकार किया जा सकता है इस ग्रन्थ में 68 छन्द के भेदों का वर्णन है। इन्होंने प्रायः शौनकीय प्रातिशाख्य के छन्दः प्रकरण का अनुसरण किया है।

1.5 यजुस्सर्वानुक्रमणी

आचार्य कात्यायन के द्वारा रचित यजुस्सर्वानुक्रमणी है आचार्य कात्यायन ने महर्षि पाणिनि के सूत्रों पर वार्तिका की रचना की है। ये नौ शुल्वसूत्रों में से एक के रचयिता भी हैं। संस्कृत के विद्वानों के द्वारा आचार्य कात्यायन का स्थितिकाल लगभग 700 ई पूर्व स्वीकार किया जा सकता है यजुस्सर्वानुक्रमणी से प्राप्त यह छन्द भाग ऋग्वेदानुक्रमणी से ही सम्बन्ध है। युजुर्वेद के दो शाखाएँ प्राप्त होती हैं — शुक्लयजुर्वेद और कृष्णयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद की प्रथम शाखा शुक्लयजुर्वेद के पाँचवें

Scanned by TapScanner

अध्याय के रूप में यह छन्द भाग स्वीकृत किया गया है। इसे विद्वानों द्वारा शुक्लयजुर्वेद अनुक्रमणी के रूप में स्वीकार किया गया है। जो यजुस्सर्वानुक्रमणी के नाम से भी प्रचलित है।

1.6 शांखायन श्रौतसूत्र

वैदिक छन्दों का उल्लेख ऋग्वेद में प्राप्त श्रौतसूत्र में शांखायन श्रौतसूत्र में किया गया है। शांखायन श्रौतसूत्र (7/27/1-30) के केवल 30 सूत्रों में ही वैदिक छन्दों का विवरण दिया गया है। इसमें निचृत् संज्ञाओं के साथ-साथ भुरिक संज्ञाओं का भी विवेचन किया गया है। यदि शांखायन श्रौतसूत्र को रचनाकाल की दृष्टि से देखा जाये तो यह सूत्रकाल के अन्तर्गत होने के कारण ऋक्प्रातिशाख्य के समकालीन स्वीकार किया जा सकता है। शांखायन श्रौतसूत्र में प्राप्त इन सूत्रों से छन्दों का एक व्यवस्थित एवं वर्णनात्मक स्वरूप प्राप्त नहीं होता है। लेकिन श्रौतसूत्रों का मुख्य विषय छन्दों का निरूपण करना नहीं है। यह तो सामान्यतः ज्ञान की दृष्टि से परिचय मात्र दिया गया है।

Q2 मूर्च्छना

क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणम्।
मूर्च्छनेत्युच्यते, ग्रामद्वये ताः सप्त च ॥

मूर्च्छना का लक्षण और उसके भेद

'मूर्च्छना' शब्द का व्युत्पत्ति मतंग के अनुकार 'मूर्छ' धातु से है, जिसके अर्थ है- मोह और समुच्छाय। कल्लि० ने 'मुर्छा' धातु से व्युत्पत्ति दी है इस प्रकार मूर्च्छना शब्द 'मूर्छ' या 'मुर्छ' धातु से निष्पन्न होता है। इन धातुओं में विकल्प से 'च' कार होने पर 'मूर्च्छना' और न होने पर 'मूर्छना' बनता है।

कल्लि० के अनुसार धातु को मोहार्थक मानने पर मूर्च्छना का अर्थ है- जिसके द्वारा श्रोता मोहित होते है और समुच्छाय अर्थ का ग्रहण करने पर अर्थ है। जिसके द्वारा राग व्याप्त होते है। अर्थात उभरते है। सिंह० ने यह स्पष्ट किया है कि मूर्च्छना लक्षण में स्वर का आरोह और अवरोह क्रम ही विवक्षित है आरोह और अवरोहरूप क्रिया नहीं।

Scanned by TapScanner

ग्रन्थकार द्वारा मूर्च्छना लक्षण में प्रयुक्त 'क्रमात्', 'सप्तानां' और आरोहणावरोहण पर टीका करते हुए कल्लि. ने यह स्पष्ट किया है कि कूटतानों से मूर्च्छना को अलग करने के लिए 'क्रमात्' का प्रयोग किया है। 'सप्तानां' के द्वारा शुद्ध तानों का निरास किया है। 'आरोहणावरोहण' के द्वारा आरोही-अवरोही वर्ण और उन पर आधारित अलंकारों का निषेध किया है। उसने यह भी कहा है कि मतंग, नन्दिकेश्वरादि ने तीन स्थानों की व्याप्ति की सिद्धि के लिये लक्ष्य के अनुरोध से द्वादशस्वर मूर्च्छना भी कहा है लेकिन द्वैग्रामिक प्रयोग में वह प्रयोजन सिद्ध हो ही जाता है इसलिये ग्रन्थकार ने इन्हें अलग से कहने की जरूरत नहीं समझी है।

भरत के मूर्च्छना लक्षण में आरोह-आरोह सम्मिलित नहीं है। मतंग ने आरोह-अवरोह क्रम कहा है लेकिन मूर्च्छना और तान का भेद बताते समय मूर्च्छना में आरोह क्रम और तान में अवरोह क्रम कहा है।

Scanned by TapScanner

नाद

नकारं प्राणनामानं दकारमनलं विदुः।
जातः प्राणाग्निसंयोगात्तेन नादोऽभिधीयते॥

नाद' शब्द की निरुक्ति

तन्त्रशास्त्र के अनुसार यहाँ 'नाद' शब्द के निरुक्ति बताई गई है। जिस प्रकार बीजाक्षरों से उनके देवताओं के रूप को प्राप्ति होती है। इसी तरह यहाँ भी 'न' और 'द' का प्राण और अग्नि रूप मान कर इन दोनों के संयोग से उत्पन्न होने के कारण 'नाद' कहा है।

सिद्धं ने 'न' और 'द' अक्षरों से उत्पन्न होने के कारण अपत्य अर्थ में 'अण्' प्रत्यय लगा कर 'वृद्धि' होने पर 'नाद' शब्द की व्युत्पत्ति बताई है। मतंग के अनुसार 'नद्' धातु से 'नाद' शब्द निष्पन्न होता है। कोश में 'नद' धातु से 'घञ्' प्रत्यय लगा कर 'नादः' शब्द दिया गया है।

तीसरा नाद - स्थान - गति - स्वर - कुल - देवता - ऋषि - छन्द - रस - प्रकरण

'विदुः' क्रियापद से व्यंजित है कि

मन्त्रज्ञ इसे जानते हैं नाद व्यक्त होने से पहले अव्यक्त रूप में भीतर तो रहता है लेकिन अभिव्यक्त अथवा उत्पन्न तभी होता है जब प्राण और अग्नि का संयोग होता है, इसलिये 'जातः' कहा है.

Scanned by TapScanner